Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-4, March-2020
www.researchguru.net

रामचरित मानस में स्त्री छवि

डॉ. सुनिल तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर शहीद भगत सिंह कॉलेज(दिल्ली विश्वविद्यालय)

डॉ. सुशीला लड्ढा
मेवाड़ विश्वविद्यालय

रश्मि पांडेय
हिंदी विभाग,शोधार्थी
मेवाड़ विश्वविद्यालय

सारांश :

भक्तिकाल हिंदी साहित्य के स्वर्णकाल के रूप में जाना जाता है। भक्तिकाल ने स्त्री को इस छवि से मुक्त करने का काम किया। स्त्री पहले जहां विलास और भोग का संसाधन थी, उसे यहां पूजनीय वंदनीय और शक्ति का केंद्र माना गया। भक्तिकाल में स्त्री छवि को नये रूप में प्रस्तुत किया गया जो कि भारतीय संस्कृति की महानता को प्रदर्शित करता है। गोस्वामी तुलसीदास ने स्त्री की ऐसे ही छवि हमारे सामने प्रस्तुत की है। यद्यपि तुलसी के अधिकांश आलोचक यह मानकर चलते हैं कि तुलसी की नारी संबंधी भावना अच्छी नहीं थी, तथापि तुलसी के नारी संबंधी दृष्टिकोण को समझने के लिए उनके काव्य में उदभूत नारी के सत एवं आदर्श रूप, असत रूप तथा पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक रूपों की विस्तृत विवेचना आवश्यक है। तुलसी की नारी संबंधी भावना उनके दार्शनिक मतवाद पर आधारित थी। उन्हें नारी का वह स्वरूप वांछनीय है, जो प्राचीन सांस्कृतिक आदर्शों पर आधारित नारी के श्रेष्ठतम धर्म पतिव्रत से संयुक्त हृदय की महानतम विभूतियां- त्याग, सेवा, ममता, कर्तव्यारूढता, पति प्रेम परायणता और नारियोचित संपूर्ण शील एवं मर्यादा से आवेष्ठित तथा जगत कल्याण की सुषमा से परिपूर्ण है। तुलसी की नारी चेतना को समझने के लिए उसे सत असत दोनों रूपों में रख कर देखना होगा। स्त्री पात्रों में सीता, पार्वती और कौशल्या सत कोटि के पात्र हैं, जबकि सूर्पनखा और मंथरा की गणना असत पात्रों में की जाती है। इसके साथ ही कुछ पात्र परिस्थितियों के साथ व्यवहार करते हैं। कैकेयी ऐसा ही चरित्र है।

गोस्वामी तुलसीदास ने नारी विषयक धारणा और विचारणा को विस्तृत आयाम पर संकल्पित किया है। मानस में स्त्री की अनेक छवियों का वर्णन समादृत है। स्त्री के व्यवहारिक जीवन, उसकी संघर्ष गाथा और उसके सैद्धांतिक स्वरूप का भी चित्रण रामचरितमानस में किया गया है। तुलसी ने मानस में नारी के विविध स्वरूप और छवियों का वर्णन किया है। उन्होंने जितना मूल्यांकन नारी मन का किया है शायद ही किसी कवि ने किया है और यह भी कहना समीचीन होगा कि अपनी शक्ति और सीमा के अनुरूप नारी की निंदा भी की है। तुलसी के लिए लोक जीवन का महत्व अधिक है अतः उनकी नजर में नारी छवि लोक दस्तावेज के रूप में है।

बीज शब्द *: सत-असत नारी रूप, लोक जीवन, लोक व्यवहार, भक्तिकाल*

परिचय:

भक्तिकाल हिंदी साहित्येतिहास का स्वर्णकाल है। जो कुछ पूर्वापर परंपरा में अनैतिक और महत्वहीन समझा गया, भक्तिकाल ने उसे सम्मान की और महत्व की नजर से देखा। भक्तिकाल शक्ति की परिकल्पना और साधना का योग है। यहां समूची मानवता अपने जीवंत और नैसर्गिक रूप में परिवेष्ठित दिखती है। स्त्री आदिकालीन इतिहास में उपभोग और मनोरंजन का साधन है। इसलिए उसे शक्ति प्रदर्शित करके लुभाने और अर्जित करने का उद्यम यहां निरंतर दिखाई देता है। ऐसा जान पड़ता है कि जीवन स्त्री दमन के बिना अधूरा है। ऐसी परिस्थिति में स्त्री की आत्मा को कुचल कर रख दिया गया था।

भक्तिकाल ने स्त्री को इस छवि से मुक्त करने का काम किया। स्त्री पहले जहां विलास और भोग का संसाधन थी, उसे यहां पूजनीय वंदनीय और शक्ति का केंद्र माना गया। महान से महान और पुरुषार्थी व्यक्ति जब अपनी समस्याओं और संघर्षों से थक जाता तो उसे शक्ति (स्त्री) का ही संबल प्राप्त होता है।

तुलसी के राम रावण की शक्ति को देख कर थक गए लेकिन उसी समय सीता की छवि उनके सामने कौंधने लगती हैं और राम में शक्ति का संचार हो उठता है कि 'बिना विजय प्राप्त किए और सीता को वापस लिए यहां से नहीं प्रस्थान करूंगा।'

भक्तिकाल में स्त्री छवि को नये रूप में प्रस्तुत किया गया जो कि भारतीय संस्कृति की महानता को प्रदर्शित करता है। गोस्वामी तुलसीदास ने स्त्री की ऐसे ही छवि हमारे सामने प्रस्तुत की है।

तुलसी के काव्य का आधार पटल अत्यंत विशाल एवं स्रोत बहुत व्यापक है। युगीन लोक चेतना से प्रभावित तुलसी के काव्य का परिवेश प्राचीन धर्म ग्रंथों के अवगाहन पर निर्मित हुआ है। डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र के अनुसार 'जहां तक नारी भावना संबंधी प्रभावोत्स्रोतों का प्रश्न है, परंपरागत संत भावना के अतिरिक्त तुलसीदास विशेष रूप से मनुस्मृति से प्रभावित हुए हैं। यद्यपि तुलसी के अधिकांश आलोचक यह मानकर चलते हैं कि तुलसी की नारी संबंधी भावना अच्छी नहीं थी, तथापि तुलसी के नारी संबंधी दृष्टिकोण को समझने के लिए उनके काव्य में उदभूत नारी के सत एवं आदर्श रूप, असत रूप तथा पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक रूपों की विस्तृत विवेचना आवश्यक है।

तुलसी की नारी संबंधी भावना उनके दार्शनिक मतवाद पर आधारित थी। उन्होंने शंकराचार्य के समान माया का केवल अविधा रूप ही नहीं देखा था, वरन उसका दूसरा पक्ष, जो जगत को उत्पन्न करने वाली आदिशक्ति स्वरूप प्रभु की महामाया है, भी देखा था। वे महान लोक साधक थे, उनका विश्वास था कि वही कीर्ति, वही कविता और वही संपदा उत्तम है, जो गंगा की भांति सबका समान हित करने वाली है। ठीक उसी प्रकार उन्हें नारी का वह स्वरूप वांछनीय है, जो प्राचीन सांस्कृतिक आदर्शों पर आधारित नारी के श्रेष्ठतम धर्म पतिव्रत से संयुक्त हृदय की महानतम विभूतियां- त्याग, सेवा, ममता, कर्तव्यारूढता, पति प्रेम परायणता और नारियोचित संपूर्ण शील एवं मर्यादा से आवेष्ठित तथा जगत कल्याण की सुषमा से परिपूर्ण है। मानवीय चरित्र के दो रूप स्पष्टत: ही दृष्टिगोचर होते हैं - एक वे, जो केवल अपनी निजी हित एवं स्वार्थ साधना में निरत यथार्थ की संकुचित सीमाओं में आबद्ध असत रूप है। तुलसीदास के साहित्य में मानवीय चरित्र की इन दोनों रूपों की अभिव्यक्ति हुई है। स्त्री पात्रों में सीता, पार्वती और कौशल्या सत कोटि के पात्र हैं, जबकि सूर्पनखा और मंथरा की गणना असत पात्रों में की जाती है। इसके साथ ही कुछ पात्र परिस्थितियों के साथ व्यवहार करते हैं। कैकेयी ऐसा ही चरित्र है। वह वास्तव में सत पात्र ही है। उसके चरित्र की ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, निष्ठुरता और स्वार्थपरकता की भावना की अभिव्यक्ति परिस्थितियों की आकस्मिकता के कारण उदभूत हुई है।

तुलसी की नारी चेतना को समझने के लिए उसे सत असत दोनों रूपों में रख कर देखना होगा। तुलसी साहित्य में अवतरित नारी के सत रूप को समझने के लिए उसे कई श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है, दैवी अंशों से युक्त अलौकिक सत रूप, सद्गुणों से आवेष्ठित कर्तव्य परायण नारी का लौकिक सत रूप, भगवान राम की भक्ति से संपन्न नारी का सत रूप, असत की माया आवरण से आच्छादित नारी का सत रूप।

तुलसी साहित्य में सीता और पार्वती में इस सत स्वरूप का दिग्दर्शन कराया गया है। यह दैवी अंशों से युक्त स्त्री रूप लोक की उत्पत्ति, पालन और संहार की असीम शक्ति से संपन्न क्लेशों का हरण करके कल्याण करने वाली परम पावन रूप में वंदनीय और पूजनीय है। वह साक्षात जग जननी स्वरूपा है, जो मनोवांछित फल प्रदान करने की क्षमता से संपन्न है। तुलसी नारी के दैवीय रूप पर न्योछावर हैं।

दैवीय रूप में नारी शोभा की राशि एवं जगत की मूल है, जिनके अंश से गुणों की आगार अगणित लक्ष्मी, पार्वती और ब्रह्माणी उत्पन्न होती है। प्रबल पावक भी ऐसी दैवी शक्ति से संपन्न नारियों के लिए चंदनवत शीतल बन जाता है और धधकती हुई अग्नि में प्रविष्ट होने पर भी उस सत् युक्त नारी के समस्त लौकिक कलंक क्षार हो जाते हैं और वह स्वयं तरकर कुंदन ही बन जाती है।

तुलसी के यहां ये दैवी शक्ति संपन्न नारियां भी अपने पति को इष्टदेव मानती हैं, तथा उनकी इच्छा अनुसार ही सृजन, पालन आदि में लीन रहती हैं। इस प्रकार दैवी अंशों से युक्त नारी का यह अलौकिक सत स्वरूप, सर्व समर्थ सर्व वंदित और सर्वथा अनिश्चित है।

सद्गुणों से आवेष्ठित कर्तव्य परायण नारी की लौकिक सत रूप के अंतर्गत तुलसी के वे सभी नारी पात्र आ जाते हैं जो लौकिक होते हुए भी क्षमा, दया, न्याय, सहनशीलता, पतिपरायणता प्रस्तुत करते हैं। सीता, पार्वती, कौशल्या, सुनया, मंदोदरी, तारा और अनुसूया ऐसे ही पात्र हैं। लौकिक सत स्वरूप नारी की श्रेष्ठतम कसौटी उसका पतिव्रत धर्म का निर्वाह है। सत स्वरूप में नारी तुलसी के लिए सर्वत्र वंदनीय रही हैं। राजा दशरथ की कौशल्या आदि रानियों को पति की प्रिया, पति के अनुकूल चलने वाली, पवित्र आचरण धारण तथा शोभाशील एवं तेज की खान कहकर अत्याधिक सराहना तुलसी ने की है। सती नारी के इस सत्व संयुक्त हृदय की अभिव्यंजना की है। जब शिव का धनुष दस सहस्त्र राजा भी नहीं उठा सके तो तुलसी को धनुष की गुरुता की उपमा सती स्त्री की सूझी।

भूप सहस दस एकहि बारा, लगे उठावन ठरह न टारा।

डगई संभु सरासनु कैसे। कामी वचन सती मनु जैसे।।[1]

दृढ़ प्रेम, अटूट भक्ति और अडिग तप की अग्नि में तपी, सच्ची लगन में निरत नारी का यह सत् स्वरूप, ऋषि-मुनियों, तपस्विनी स्त्रियों, मुनि श्रेष्ठों और देवताओं द्वारा भी प्रशंसनीय और वंदनीय है। तुलसी की दृष्टि में ऐसी नारी, उसका वंश और उसके माता-पिता सभी अभ्यर्थना के पात्र हैं। श्रेष्ठ अमूल्य रत्न स्वरूप ऐसी कन्याओं के जन्म से माता-पिता का यश संसार भर में प्रकाशित हो जाता है। सती नारी को तुलसी पारस पत्थर मानते हैं जिसके स्पर्श मात्र में कुधातु रूप पुरुष को भी श्रेष्ठ बना सकने का सामर्थ्य है। वह ऐसा तो अमूल्य रत्न है जिसकी अभिलाषा श्रेष्ठ राजा भी करते हैं। यही कारण था कि शिव को पार्वती के हाथों बिक जाना पड़ा और इष्टदेव भगवान राम जी सीता के सम्मुख छाया मात्र ही रह गए। नारी के सती में केवल सीता या पार्वती ही महान गौरव की अधिकारिणी नहीं है, वरन राक्षस या वानर जाति की स्त्री भी महिमामयी है। महाबली राक्षस जालंधर अपनी सती पत्नी के परम पतिव्रत के कारण ही

---

[1] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या - 1।1।251

अपराजेय हो गया था। शिवजी भी उस दैत्यराज की पवित्र पत्नी के सत्व के कारण उसे जीतने में असमर्थ रहे। कर्तव्य पथ पर आरूढ़, नीति परायण, विवेकवान एवं सत्वगुण युक्त राक्षस और वानर कुल में उत्पन्न मंदोदरी, तारा त्रिज्या की भी तुलसी ने बार-बार सराहना की है। अतः प्रेम, स्नेह, ममता, करुणा, क्षमाशीलता आदि गुणों से युक्त सदासद विवेक से संपन्न कर्तव्य मार्ग पर आरूढ़, अभिमंडित नारियां ही लौकिक रूप में सत् स्त्रियों का आदर्श है।

भगवान राम की भक्ति से संपन्न नारी के सत् रूप के अंतर्गत तुलसी ईश्वर उन्मुख व्यक्ति को, चाहे स्त्री हो या पुरुष, जड़ हो या चेतन, भगवान का अत्यधिक प्रिय मानते हैं।

राम भगति रत नर अरु नारी,
सकल परम गति के अधिकारी'

ये कहकर तुलसी ने भक्त रूप में नारी को मोक्ष की अधिकारिणी माना है। चाहे वह अहिल्या द्वारा राम की चरणधूलि प्राप्त करने से मुक्ति का प्रसंग हो या रावण की मृत्यु के बाद मंदोदरी का विलाप, जो विलाप न होकर भगवान के प्रति स्तुति गान ही अधिक है, में तुलसी रामरत स्त्री की छवि का ऊंचा आदर्श होता है। वास्तव में राम जब यह कहते हैं-

पुरुष नपुंसक नारि वा जीव चराचर कोई।
सर्वभाव भज कपट तजि मोहि पर प्रिय सोई।।[2]

तब यह साबित हो जाता है कि तुलसी की दृष्टि में भक्ति के क्षेत्र में नारी भी सदा स्तुत्य, मंगलमय और कल्याणकारी है।

गोस्वामी तुलसीदास ने नारी विषयक धारणा और विचारणा को विस्तृत आयाम पर संकल्पित किया है। मानस में स्त्री की अनेक छवियों का वर्णन समादृत है। स्त्री के व्यवहारिक जीवन, उसकी संघर्ष गाथा और उसके सैद्धांतिक स्वरूप का भी चित्रण रामचरितमानस में किया गया है। मानस में स्त्री की छवि दो प्रकार की दिखती है। पहली छवि तो वह है जो स्त्री धर्म का पालन करने वाली और आदर्श परिवार तथा समाज की स्थापना करनेवाली।इसमें सीता, उर्मिला, मंदोदरी आदि स्त्रियां समाहित है।

स्त्री छवि का दूसरा पक्ष वह जो स्वार्थ और लोलुप मन के कारण समाज और परिवार को तोड़ने का काम करती है इसमें कैकेयी, मंथरा आदि की छवि दिखती है।

रामचरितमानस की संरचनात्मक कलेवर को देखा जाए तो सबसे पहले निंदित पात्रों का सामना करना पड़ता है और वहां सबसे पहले ताड़का आती है। तुलसी कहते हैं कि

चले जात मुनि दीन्ह देखाई, सुनि ताड़का क्रोध करि धाई।
एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा, दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।।[3]

तुलसी की दृष्टि यहां व्यापकता को लिए हुए है। खल पात्र भी अपने आप में मर्यादित हैं। ताड़का को क्रोध स्वयं नहीं आता बल्कि वह मुनि के द्वारा प्रेरित होने पर क्रोध करती है और राम उसकी हत्या करते हैं तथा अपने अनुराग का पात्र बनाते हैं।

इसी प्रकार कैकेयी खल पात्र तो है लेकिन उसके भीतर राम के प्रति प्रेम कम नहीं है।

---

[2] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या -7।87

[3] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या - 1/209

वह राम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर कहती है-

जौ विधि जनम देइ करि छोई।
होहूँ राम सिय पूत पतोहूँ।।[4]

तो यहां भी तुलसी में नारी के कोमल और मृदुल स्वभाव को अभिव्यक्त किया है। रामचरितमानस में स्त्री की छवियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। लेकिन मंथरा ने कैकेयी को स्वार्थ लोलुपता और पुत्र मुंह का ऐसा आवरण चढ़ाया कि वह अपने स्वत्व और सत विचार से विचलित हो गई और उसकी नियति में ऐसी दृढ़ता आई कि उसका चरित्र भारतीय समाज में निंदनीय दिखने लगा। सबने कहा कि राम को इस प्रकार की सजा नहीं मिलनी चाहिए लेकिन वह तनिक भी नहीं मानी-

करहुं राम पर सहज सनेहू।
कहि अपराध आज वन देई।।[5]

इसलिए वह निंदा का पात्र है। तुलसी ने कैकेयी को लोक व्यवहार के अनुसार ठीक नहीं माना-

व्याधि असाधि जनि तिन्ह त्यागी।
चली कहत मतिमद अभागी।।[6]

गोस्वामी जी ने कैकेयी के लिए उसके विचार और कार्य को देखकर अभागी शब्द का प्रयोग किया। लेकिन वह अपनी मूल चेतना में राम का हित चाहने वाली है।

इसी प्रकार तुलसी ने सूर्पणखा आदि नारी पात्रों का विश्लेषण किया। वह राम से कहती है-

तुम सम पुरुष न मो सम नारी।
यह संजोग विधि रचा बिचारी।।[7]

इसी के साथ दूसरे पक्ष की अभिव्यक्ति करते हुए नारी के मर्यादित स्वरूप का वर्णन तुलसी ने किया है। नारी का यही रूप तुलसी को सबसे अधिक प्रिय है। इसलिए कहते हैं कि पातिव्रत नारी का एकमात्र धर्म है-

एकै धर्म एक व्रतनेमा। काय वचन मन पति पद प्रेमा।।[8]

और पातिव्रत की सघन व्याख्या करते हुए कहा कि ये चार प्रकार की होती है-

जग पतिव्रता चारि विधि अहहीं।
वेद पुरान सत सब कहही।।
उत्तम के अस बस मन माही।
सपनेहुँ आन पुरुष जग नांही।।
मध्यम परपति देखें कैसे।
भ्राता पिता पुत्र निज जैसे।।
धरम विचारि कुल रहहि।
सो निकृष्ट निय श्रुति अस कहहीं।।
बिनु अवसर भय ते रह जोई।
जानेउ अधम नारी जग सोई।।[9]

निष्कर्ष:

इस प्रकार तुलसी ने मानस में नारी के विविध स्वरूप और छवियों का वर्णन किया है। वास्तव में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि तुलसी ने अपने समय की नारी के वैविध्य और उसकी मनोवैज्ञानिक परिणति को मुक्त

---

[4] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या -2।15।1-4

[5] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या -2।49।2-4

[6] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या -2।28।4

[7] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या -3।17

[8] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या -3।5।5

[9] रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर, पृष्ठ संख्या -3।5।6-8

रूप से अभिव्यक्त करने वाले इकलौते कवि हैं। यह भी सत्य है कि अपने युग की सीमा और धारणा को ध्यान में रखकर उसकी कमियों को भी स्पष्ट किया है। उन्होंने जितना मूल्यांकन नारी मन का किया है शायद ही किसी कवि ने किया है और यह भी कहना समीचीन होगा कि अपनी शक्ति और सीमा के अनुरूप नारी की निंदा भी की है। तुलसी के लिए लोक जीवन का महत्व अधिक है अतः उनकी नजर में नारी छवि लोक दस्तावेज के रूप में है। वे तमाम मर्यादाओं के बीच उसकी कमजोर कड़ी का भी मूल्यांकन करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

रामचरितमानस, गीता प्रेस, गोरखपुर